

मुख्य जनसंपर्क अधिकारी का कार्यालय  
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति

**जामिया मिल्लिया इस्लामिया के वाइस-चांसलर और रजिस्ट्रार ने 101 आम के पेड़ लगाकर 'माँ वाटिका' का उद्घाटन किया; यूनिवर्सिटी बारिश के पानी को इकट्ठा करने के लिए बनाएगी तालाब**

नई दिल्ली, 5 जून, 2026

विश्व पर्यावरण दिवस 2026 के मौके पर, जो इस वर्ष जलवायु परिवर्तन की थीम पर मनाया जा रहा है, जामिया मिल्लिया इस्लामिया (जेएमआई) के वाइस-चांसलर प्रो. मज़हर आसिफ़ और रजिस्ट्रार प्रो. मो. महताब आलम रिज़वी ने यूनिवर्सिटी कैम्पस में 101 आम के पौधे लगाकर 'माँ वाटिका' नाम के एक बड़े बाग का उद्घाटन किया। माताओं को समर्पित यह पहल माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के अभियान "एक पेड़ माँ के नाम" के अनुरूप है और पर्यावरण की स्थिरता और पारिस्थितिक संरक्षण के प्रति भारत सरकार की प्रतिबद्धता को मजबूत करती है।

पहला आम का पौधा एफटीके सेंटर फॉर इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी के पीछे तय किए गए ग्रीन एरिया में माताओं का प्रतिनिधित्व करने वाली चार महिलाओं द्वारा लगाया गया, जो मातृत्व के प्रति स्नेह, आभार और सम्मान का प्रतीक है।

विशिष्ट अतिथियों का स्वागत करते हुए, जेएमआई के पर्यावरण विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो. राजीव सिंह ने कुलपति और रजिस्ट्रार को पौधे भेंट किए। उन्होंने सभा को बताया कि 101 आम के पौधे दिल्ली सरकार और जेएमआई के पूर्व छात्रों द्वारा उदारतापूर्वक दान किए गए हैं। उनके योगदान के लिए आभार व्यक्त करते हुए, प्रो. सिंह ने कहा, "हर दिन पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जाना चाहिए। कुलपति ने लगातार इस बात पर जोर दिया है कि हम जो पेड़ लगाएं, वे फल देने वाले हों ताकि पक्षी, पशु और इंसान सभी उनसे लाभ उठा सकें। ऐसी पहल जैव विविधता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। इस उद्देश्य के लिए पूरे बाग का निर्माण जेएमआई की पर्यावरण स्थिरता के प्रति मजबूत प्रतिबद्धता को दर्शाता है।"

सभा को संबोधित करते हुए, जेएमआई के रजिस्ट्रार प्रो. मो. महताब आलम रिज़वी ने बताया कि "माँ वाटिका' नाम बहुत सोच-समझकर चुना गया था ताकि विभिन्न संस्कृतियों और समाजों में माताओं के सम्मानित स्थान को दर्शाया जा सके।" उन्होंने फैकल्टी सदस्यों, कर्मचारियों और छात्रों से आग्रह किया कि वे केवल प्रतीकात्मक वृक्षारोपण अभियानों से आगे बढ़ें और अपने लगाए गए पेड़ों की सक्रिय रूप से देखभाल करें। "सिर्फ़ पेड़ लगाना काफी नहीं है; हमें यह भी पक्का करना होगा कि वे बढ़ें और जीवित रहें। पर्यावरण के प्रति जागरूकता को जीवन का हिस्सा बनाना होगा। तेज़ी से हो रहे शहरीकरण और हरियाली वाली जगहों के कम होने से इकोलॉजिकल बैलेंस, बायोडायवर्सिटी और आखिरकार इंसानी अस्तित्व के लिए गंभीर खतरा पैदा हो गया है। हमें मिलकर अपने प्राकृतिक पर्यावरण को बचाने और उसे बेहतर बनाने की दिशा में काम करना होगा," प्रो. रिज़वी ने कहा।

जेएमआई के वाइस-चांसलर प्रो. मज़हर आसिफ़ ने अध्यक्षीय भाषण देते हुए कैंपस के इकोसिस्टम को बनाए रखने और उसे बेहतर बनाने की कोशिशों के लिए एनवायरनमेंटल साइंसेज डिपार्टमेंट, यूनिवर्सिटी के हॉर्टिकल्चर स्टाफ़ और मालियों को बधाई दी। प्रो. आसिफ़ ने कहा, "शहरी इलाकों के उलट, गांवों का अक्सर प्रकृति से गहरा रिश्ता होता है; वे पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं दोनों को बचाकर रखते हैं और इस तरह एक सस्टेनेबल एनवायरनमेंट में योगदान देते हैं। शहरों में प्राकृतिक संसाधनों के ज़्यादा इस्तेमाल से जंगल कटे हैं, प्रदूषण बढ़ा है और पर्यावरण को नुकसान पहुँचा है। अगर सही कदम नहीं उठाए गए, तो इंसानियत को गंभीर नतीजों का सामना करना पड़ेगा।"

पौधारोपण अभियान की अहमियत बताते हुए प्रो. आसिफ़ ने कहा, "कैंपस में लगाए गए आम के 101 पेड़ - जिनमें दशहरी, आम्रपाली और लंगड़ा जैसी देसी किस्में शामिल हैं - आने वाली कई पीढ़ियों के छात्रों के काम आएंगे और दशकों तक यूनिवर्सिटी की समृद्ध बायोडायवर्सिटी में योगदान देंगे।"

प्रो. आसिफ़ ने कहा, "हमारे देसी पेड़ों की उम्र लंबी होती है और उनसे पर्यावरण को बहुत फ़ायदा होता है। अलग-अलग संस्कृतियों और परंपराओं में पेड़ लगाना एक नेक काम माना जाता है। जामिया मिल्लिया इस्लामिया में कई तरह के पेड़-पौधे, जीव-जंतु और पक्षी पाए जाते हैं, और हमें इस इकोलॉजिकल विरासत को मज़बूत करते रहना चाहिए।"

प्रो. आसिफ़ ने यह भी बताया कि यूनिवर्सिटी कैंपस में एक बड़ा तालाब बनाने की योजना बना रही है ताकि ग्राउंडवाटर रिचार्ज बेहतर हो, रेनवाटर हार्वेस्टिंग में सुधार हो और जल-जमाव (water-logging) को रोका जा सके। जेएमआई के वाइस-चांसलर प्रो. आसिफ़ ने आगे कहा, "हम कैंपस के अंदर पानी का एक बड़ा स्रोत बनाने पर काम कर रहे हैं ताकि बारिश के पानी को असरदार ढंग से इकट्ठा और स्टोर किया जा सके। इस पहल से ग्राउंडवाटर का स्तर बढ़ाने और मॉनसून के मौसम में जल निकासी से जुड़ी चुनौतियों को कम करने में मदद मिलेगी।"

इस कार्यक्रम में यूनिवर्सिटी के सीनियर अधिकारियों ने उत्साह के साथ हिस्सा लिया, जिनमें परीक्षा नियंत्रक प्रो. एहतेशामुल हक; वित्त अधिकारी प्रो. मो. कमालुन नबी; मुख्य प्रॉक्टर प्रो. असद मलिक; फैकल्टी के डीन - प्रो. इक्तिदार मो. खान, प्रो. गुलाम यज़दानी, प्रो. बिंदुलिका शर्मा; एलुमनाई मामलों के डीन प्रो. आसिफ़ हुसैन; यूनिवर्सिटी लाइब्रेरियन डॉ. विकास सीतारामजी नागराले; विदेशी छात्र सलाहकार प्रो. साइमा सईद; विभागों के अध्यक्ष; केंद्रों के निदेशक; सुरक्षा सलाहकार; यूनिवर्सिटी के अधिकारी; हॉर्टिकल्चर डिपार्टमेंट के सदस्य; माली और सफ़ाई कर्मचारी और पर्यावरण विज्ञान विभाग के छात्र शामिल थे। प्रतिभागियों ने अपनी माताओं के नाम पर पेड़ भी लगाए, जिससे "एक पेड़ माँ के नाम" अभियान की भावना और मज़बूत हुई।

प्रो. साइमा सईद  
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी